पापा का निशान

लेखनः ग्वैन्डोलिन बैटल-लेवर्ट, चित्रः कोलिन बूटमैन
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



''आज़ादी आसानी से नहीं मिलती,'' पापा ने कहा। 'मेरे पापा ने मुझे यह सिखाया था।"

सिम्स जानता है कि चुनाव का दिन उसके पापा और लामार काउन्टी के लिए एक बड़ा दिन होगा। उसके पापा पहली बार वोट डाल सकेंगे। पर सिम्स की इच्छा है कि वे अपना नाम लिख सकें। ताकि जब वे वोट देने अदालत घार जाएं, उनका सिर फक्र से ऊँचा हो। सिम्स ने धार लिया है कि वह पापा को नाम लिखना सिखाएगा। क्योंकि अपने पापा की तरह वह भी जानता है कि आज़ादी आसानी से नहीं मिलती।

पापा का निशान

लेखनः ग्वैन्डोलिन बैटल-लेवर्ट
चित्रः कोलिन बूटमैन
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सुबह की रोशनी लामार काउन्टी पर धीरे-धीरे खिसकी आ रही थी। सिम्स और उसके पापा कस्बे जा रहे थे। उनकी घोड़ागाड़ी धचर-धच्च करते बढ़ रही थी। वे बड़े खेतों के पास से गुज़र रहे थे जहाँ पशु चर रहे थे और लकड़ी के छोटे-छोटे घर थे, जिनकी रोशनियाँ अभी तक जली ही नहीं थीं। आगे बढ़ते-बढ़ते खेत छोटे और घर ज़्यादा पास-पास होने लगे। आखिरकार वे उन इमारतों के संकुल तक पहुंचे जहाँ चारों ओर मतदान के इश्तहार और लहराते झंडे थे। आख़िर यह समय चुनाव का जो था।

"देखो!" सिम्स चीखा। "वोट दो! वोट दो!"

"अरे आराम से," पापा ने कहा। "तुम सोते कुत्ते को जगा दोगे।"

सिम्स हंसा। वह गाड़ी के हरेक धचके साथ खुशी से ऊपर-नीचे कूद रहा था।

उनके समुदाय के पुरुष सप्ताह में एक बार मिलते और चुनावों पर बात करते थे। वे गिरजे में या सिम्स के घर मिला करते थे। सिम्स हमेशा अपने पिता के पीछे खड़े हो पूरी बातचीत सुना करता था।



पापा ने गाड़ी किराने की दुकान के पास रोकी।

"जल्दी से नीचे कूदो," पापा बोले। "बरबाद करने को समय नहीं है सिम्स।"

सिम्स को दुकान के दरवाज़े से ही सेब, संतरों, प्याज़, आलू और पिपरमिंट की गोलियों की महक आने लगी।



"सैम्युअल टी. ब्लो," दुकान मालिक मिस्टर जोन्स ने कहा। "आज तो बड़ी जल्दी आ पहुँचे हो।"

"गुड मॉर्निंग," पापा ने कहा। "सिम्स के पास सामान की फेहरिस्त है।" सिम्स ने एकदम साफ आवाज़ में फेहरिस्त की एक-एक चीज़ पढ़ कर सुनाई। मिस्टर जोन्स ने एक खाली डब्बे में सभी चीजें रखीं। पापा खड़े सब कुछ देखते रहे।

"खैर," मिस्टर जोन्स ने कहा, "चुनाव का दिन कुछ ही सप्ताहों में आने वाला है। तुम कलर्ड (काले) लोगों को बेहद फक्र होगा।"

"इतिहास यहीं, हमारी लामार काउन्टी में लिखा जाने वाला है।" पापा ने जवाब में कहा।

दुकान में मौजूद सब लोग रुक गए। पापा कम बोलते थे। पर जब बोलते बात अहम ही होती थी।

"मेरे पिता तो वोट नहीं दे सके। ख़ुदा उनकी रुह को सलामत रखे। पर वे जानते थे कि उनके समय में नहीं तो मेरे समय में यह हो कर रहेगा।"

सिम्स ने नज़र उठा कर देखा और मुस्कराया। "फेहरिस्त में बस इतना ही है।"

"नहीं अभी नहीं," पापा जल्दी से बोले। "क्या तुम्हें एक मीठी गोली चाहिए?"

"अरे साथ में वोट देने वाला पोस्टर भी लेते जाओ," मिस्टर जोन्स ने कहा।

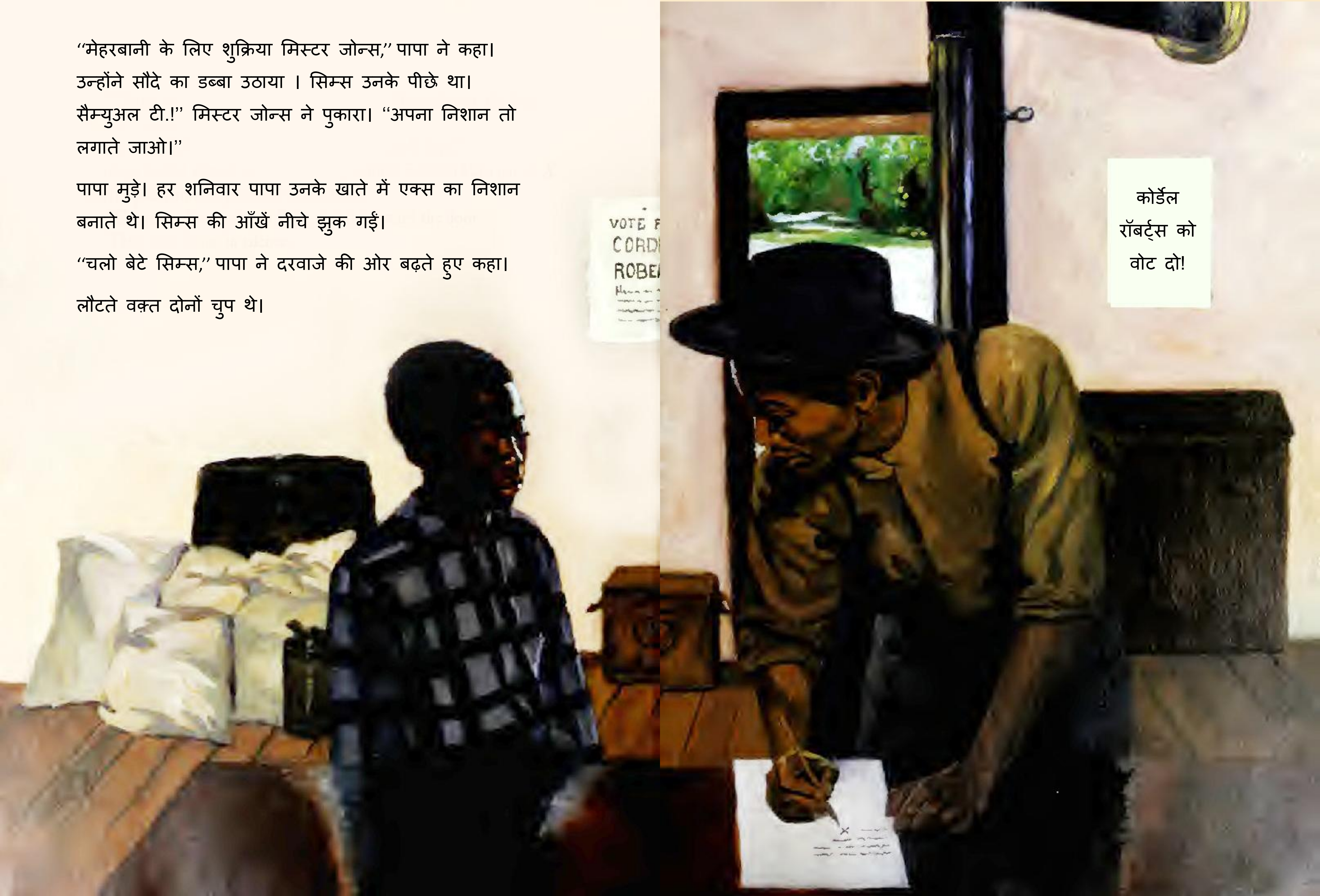


''मेहरबानी के लिए शुक्रिया मिस्टर जोन्स,'' पापा ने कहा। उन्होंने सौदे का डब्बा उठाया । सिम्स उनके पीछे था। सैम्युअल टी.!'' मिस्टर जोन्स ने पुकारा। ''अपना निशान तो लगाते जाओ।''

पापा मुड़े। हर शनिवार पापा उनके खाते में एक्स का निशान बनाते थे। सिम्स की आँखें नीचे झुक गईं।

''चलो बेटे सिम्स,'' पापा ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा।

लौटते वक़्त दोनों चुप थे।





जब गाड़ी रुकी तो सिम्स बोल ही पड़ा। "पापा मैं आपको दिखा दूंगा कि आपका नाम कैसे लिखा जाता है। तब आपको कभी एक्स का निशान नहीं लगाना पड़ेगा।"

"सिम्स तुम्हारे पास अपना खुद का बहुतेरा काम है," पापा ने कहा। अब सारा सौदा अन्दर ले जाने में मदद करो।"

उस रात काउन्टी के काले मर्द उनके खाने की मेज़ के गिर्द इकट्ठा थे। सिम्स ने उनके डरे चेहरों को देखा, उनकी बातें सुनीं।

"मुसीबत खदबदा रही है, एक आदमी ने नीची आवाज़ में कहा। "कई गोरे नहीं चाहते कि हम काले वोट दें।"

"आज़ादी आसानी से नहीं मिलती," पापा ने कहा। "यह मेरे पिता ने मुझे सिखाया था।"

"हाँ, आगे बढ़ो या मरो," एक दूसरे आदमी ने कहा।

सिम्स खड़ा हुआ, उसने वोट डाने वाला पोस्टर हवा में लहराया। "मैं मदद करूंगा," वह बोला। "हर घर को ऐसा एक पोस्टर मिलेगा।" लोग हंसे। बैठक जारी रही। सिम्स अपने कमरे में गया ताकि और पोस्टर बना सके।





जल्द ही पापा ने हाँक लगाई, "सुबह जल्दी हो जाती है, अब चलो अपने बिस्तर में घुसो!"

"ठीक है पापा," सिम्स ने मोमबत्ती बुझाते कहा। वह बिस्तर में चद्दर और कम्बल के बीच लेटा, हिला-डुला। सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। रसोई से आती सुनहरी रोशनी में लम्बी और छोटी छायाएं हिल-डुल रही थीं। वह दबे पाँव दरवाज़े तक गया। उसने अपने पापा को किसी कागज़ पर झुका पाया।





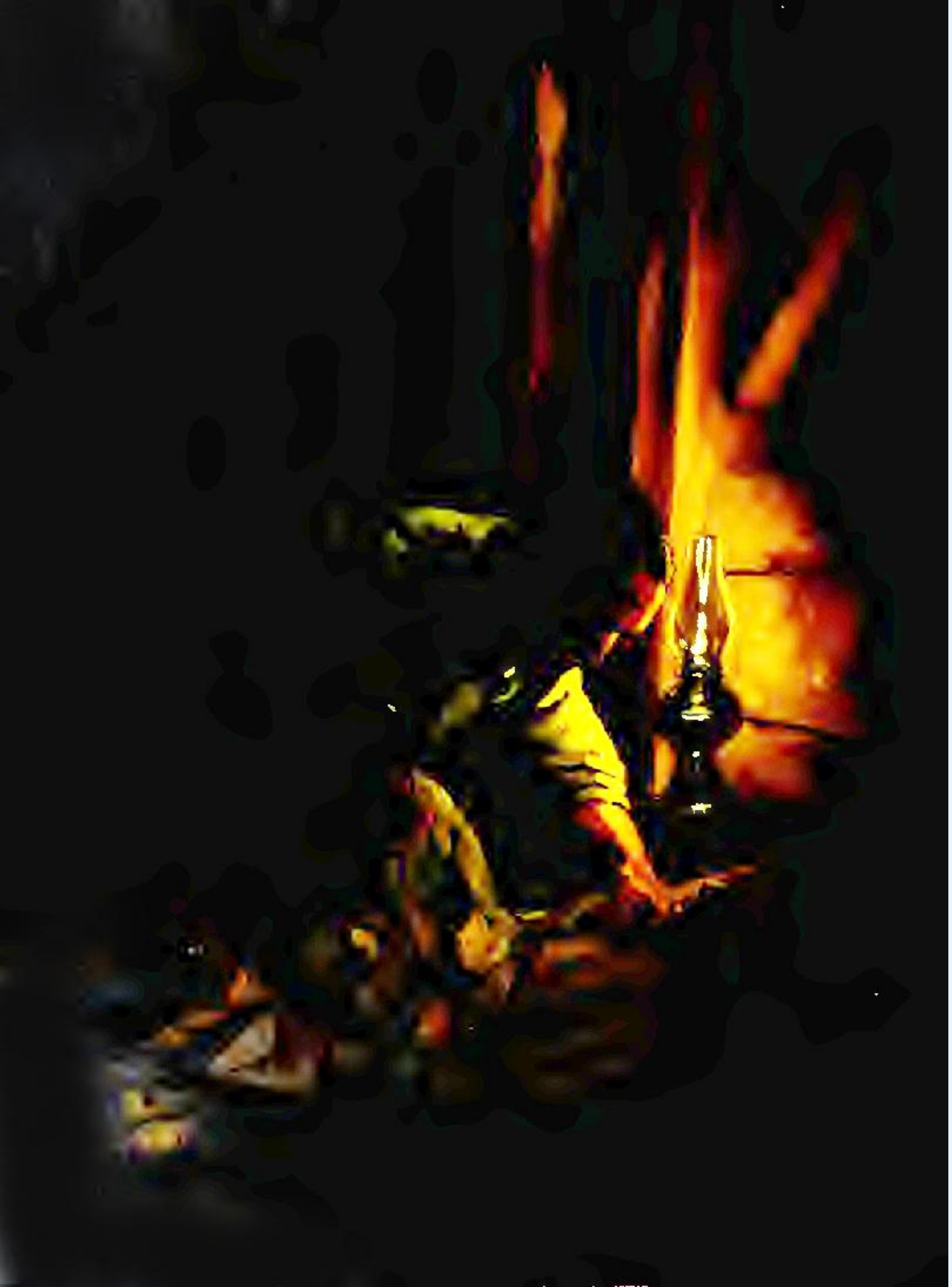
''धीरे-धीरे इसमें सुधार होता जाएगा,'' सिम्स ने ममा को कहते सुना।

''मेरी लिखावट मुर्गी के पंजों की खरोचों सी दिखाई देती है,'' पापा ने मायूसी से कहा।

ममा धीमे से हंसी। ''और मेरी लाल मिर्च-सी। अक्षर कागज़ में जहाँ-तहाँ कूद रहे हैं।

''जब मैं वोट दूंगा मैं मत-पत्र लेते समय अपना नाम लिखना चाहता हूँ।

''आप क्या कर रहे हैं?'' सिम्स रोशनी में कूदते बोला।



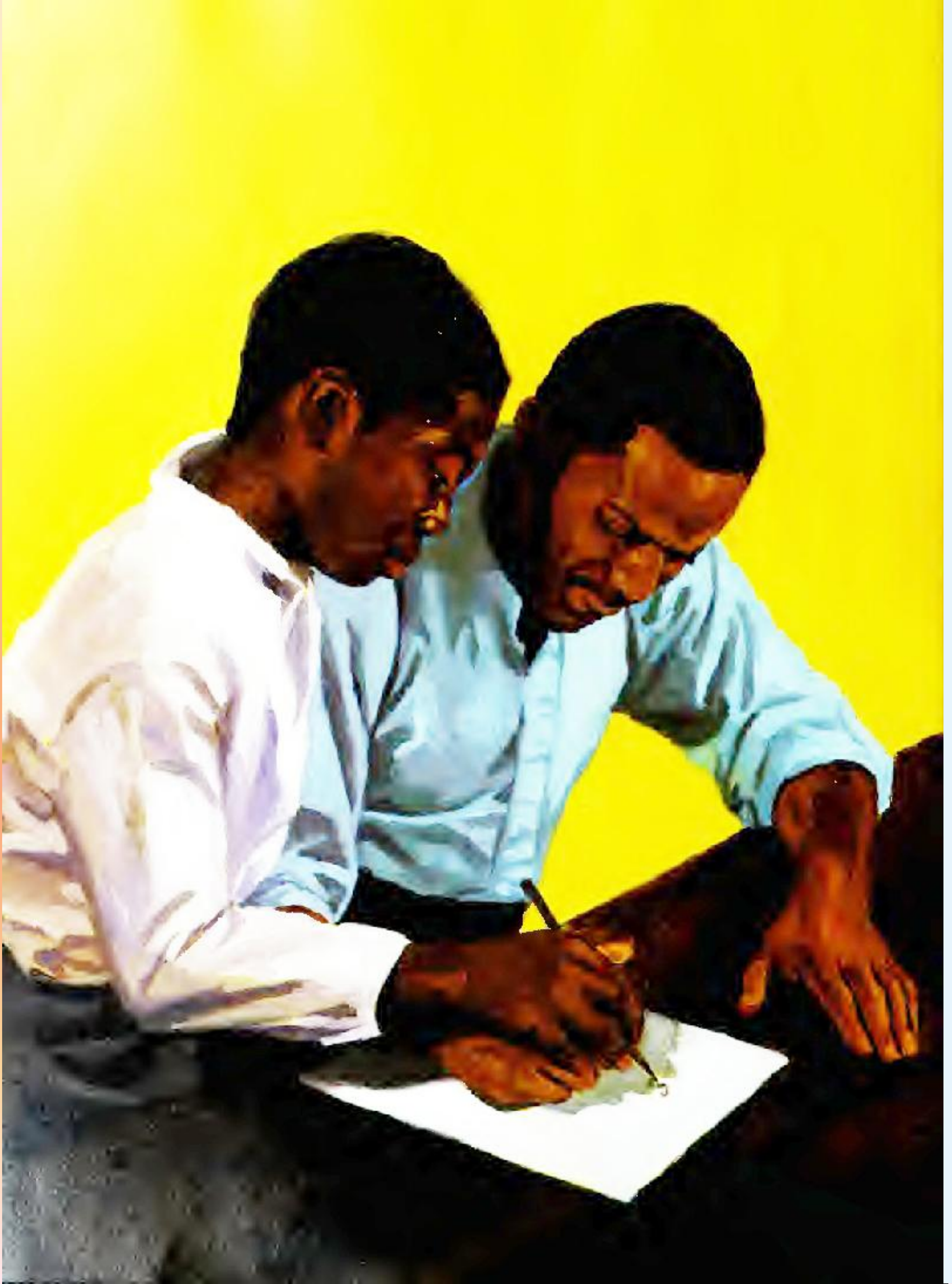
पापा ने नज़रें उठाईं, सिम्स अपने कमरे में दौड़ा और बिस्तर पर कूदा।

"पापा, दरअसल मेरी आँखें बार-बार खुल रही थीं," सिम्स ने कहा।

पापा अन्दर आए। उन्होंने सिम्स के गिर्द घर की सिली रज़ाई ठीक से लपेटी।

नींद आख़िर आ ही गई।

स्कूल जाने से पहले सिम्स ने पापा का नाम सुन्दर अक्षरों में लिखा और वह कागज़ रसोई की मेज़ पर रख दिया। उस रात सिम्स ने दरवाज़े से झांक कर देखा और पापा को धीमे-धीमे, बड़ी सावधानी से लिखते पाया। पर सुबह सिम्स को फिर से मुर्गियों के खुरचने के निशान ही मिले।



कुछ दिनों बाद सिम्स ने पापा को मेज़ पर बैठा पाया।

"सिम्स यहाँ आओ तो ज़रा," पापा ने बुलाया। "मैं तुम्हारे जैसे अक्षर बना ही नहीं पाता, क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?"

"बेशक कर सकता हूँ।"

सिम्स ने पापा की उंगलियों को पकड़ कागज़ पर अक्षर बनवाए। पापा ने हरेक घुमाव को बड़े ग़ौर से देखा।

"अरे अब तो मैं अपना नाम साफ़ पढ़ सकता हूँ," पापा ने खुशी से कहा। "अब मैं तुम्हारी मदद से लिखूंगा।"

हर दिन पापा मेज़ पर उंकड़ू झुकते और धीमे-धीमे अपने नाम के अक्षरों के घुमावों की नकल करते। हर सुबह सिम्स पापा का लिखा जाँचता।

जल्द ही चुनाव का दिन पास आता जा रहा था। सिम्स स्कूल के बाद चुनाव के पोस्टर को हर घर और पेड़ पर चस्पां करता। वे पशुओं के गलों तक में लटके नज़र आने लगे थे।



चुनाव से पहले की रात गिरजा काले पुरुषों से भरा था।

“कौन मेरे साथ वोट देने चलेगा?” पापा ने पूछा।

पुरुष बुदबुदाए और कुछ ने आहें भरीं।

एक लम्बा आदमी बोला, “हम सबके परिवार हैं। अगर हम चले गए तो उनका ख़याल कौन रखेगा?”

“एक ही दिन की तो बात है,” पापा बोले, “वे ठीक रहेंगे।”

“कुछ गोरे बेहद नाराज़ हैं,” दूसरा बोला। “वे न जाने क्या कर डालें हमें बहुत डर है।”

सबने बुदबुदा कर हामी भरी।

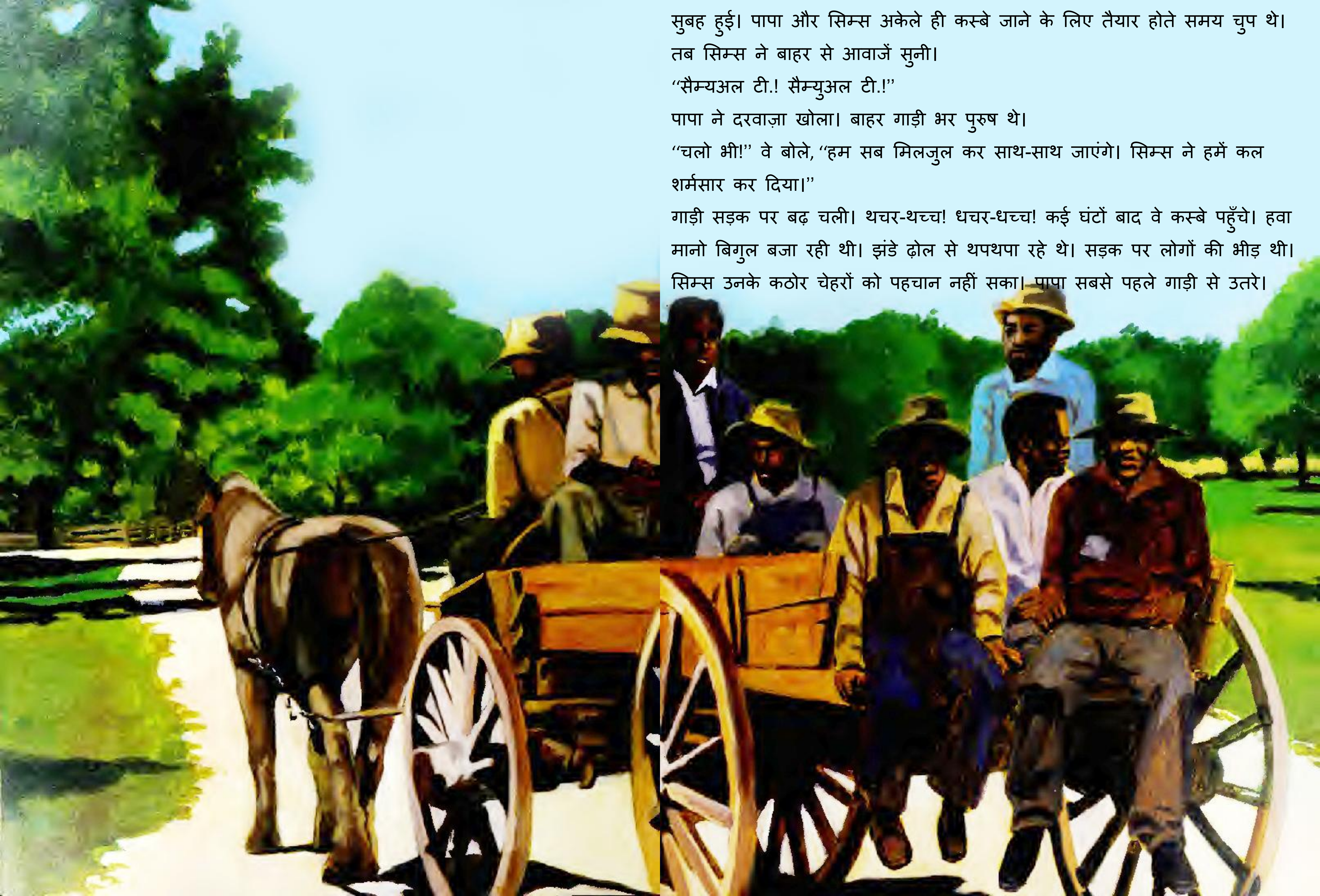
“हम शान्ति से जाएंगे। हम एकजुट हो कर जाएंगे,”

कमरे में चुप्पी पसर गई।

सिम्स उठा, “पापा मैं आपके साथ चलूंगा।”

बैठक खत्म हो गई पुरुष चले गए।





सुबह हुई। पापा और सिम्स अकेले ही कस्बे जाने के लिए तैयार होते समय चुप थे। तब सिम्स ने बाहर से आवाजें सुनी।

''सैम्यअल टी.! सैम्युअल टी.!''

पापा ने दरवाज़ा खोला। बाहर गाड़ी भर पुरुष थे।

''चलो भी!'' वे बोले, ''हम सब मिलजुल कर साथ-साथ जाएंगे। सिम्स ने हमें कल शर्मसार कर दिया।''

गाड़ी सड़क पर बढ़ चली। थचर-थच्च! धचर-धच्च! कई घंटों बाद वे कस्बे पहुँचे। हवा मानो बिगुल बजा रही थी। झंडे ढ़ोल से थपथपा रहे थे। सड़क पर लोगों की भीड़ थी। सिम्स उनके कठोर चेहरों को पहचान नहीं सका। पापा सबसे पहले गाड़ी से उतरे।

भीड़ को चीरते दुकान मालिक मिस्टर जोन्स निकले। ''सैम्युअल टी.,'' वे बोले, ''मैं तुम्हारे साथ वोट देने चलूंगा।''

पापा और वे, दोनों साथ-साथ कस्बे के बड़े चौराहे पर बने अदालत घर की ओर बढ़े।





मैं सैम्युअल टी. ब्लो हूँ,'' पापा ने कहा। ''मैं अपना वोट देने आया हूँ।''

''अपना निशान लगाइए,'' क्लर्क ने कहा।

सिम्स फक्र से बोल पड़ा, ''मेरे पापा अपना दस्तख़त कर सकते हैं।''

पापा ने अपना नाम लिखा। क्लर्क ने उन्हें मत-पत्र दिया। पापा ने अपनी पसन्द का उम्मीदवार चुना।

तब बोले, ''सिम्स यहाँ आओ। अपन डब्बे में यह वोट साथ-साथ डालेंगे।'' सिम्स मुस्कराया। पापा ने वोट दिया। लामार काउन्टी बदल चुकी थी।

लेखिका की कलम से

गृहयुद्ध के बाद अमरीका के संविधान के तेरहवें संशोधन को अपनाया गया, जिससे गुलामी को ख़त्म कर दिया गया। फ्रैडरिक डगलस जैसे नेताओं ने तब भी कहा था कि गुलामों को सिर्फ आज़ाद करना नाकाफ़ी है। काले पुरुषों को भी वोट देने का अधिकार होना चाहिए। आख़िरकार 1868 में चौदहवें संविधान संशोधन द्वारा काले पुरुषों को भी नागरिकों का दर्जा दिया गया।

इसके दो वर्षों बाद पंद्रहवां संविधान संशोधन पारित हुआ जिसने कालों के मत देने के अधिकार को संरक्षित किया। हालांकि दक्षिण के ज़्यादातर काले लोग पढ़-लिख नहीं सकते थे, वे जल्द ही यह समझने लगे कि मत द्वारा वे अपनी ज़िन्दगियाँ सुधार सकते हैं।

दक्षिण के गोरे इससे बेहद नाराज़ हुए, वे अपनी खोई सत्ता को फिर से वापस पाना चाहते थे। कुछ ही सालों में उन्होंने इसका रास्ता तलाश ही लिया। उन्होंने कालों को मतदान-कर देने मजबूर किया। अधिकतर काले ग़रीब थे। वे यह कर अदा नहीं कर सकते थे। इसके अलावा साक्षरता परीक्षाएं अनिवार्य बना दी गईं, ये भी उन्हें मत देने से रोकती थीं। साथ ही हिंसा द्वारा कालों को मतदान केंद्रों से भी भगाया जाता था। नतीजतन कई काले मत दे ही नहीं पाते थे।

औरतों को मत देने का अधिकार 1920 में मिला। पर काली स्त्रियों के सामने ठीक वे ही बाधाएं थीं जिनसे काले पुरुष दशकों से जूझ रहे थे।

1960 में डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर व अन्य काले नेताओं ने कालों और गोरों को संगठित कर मताधिकार के लिए एक अहिंसक आन्दोलन आयोजित किया। 1964 में संविधान का चौबीसवां संशोधन पारित हुआ जिससे राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति व कांग्रस सदस्यों के चुनावों में मतदान कर हटा दिया गया। इस वर्ष की गर्मियाँ 'आज़ादी की गर्मियाँ' कहलाईं, क्योंकि मिसिसिपी में एक बड़ा भारी मतदान अधिकार आन्दोलन चला।

बाद में अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने स्थानीय और राज्य स्तरीय चुनावों के लिए भी मतदान कर हटाया। 1965 में कांग्रेस ने मतदान अधिकार कानून पारित किया जिससे वे बाधाएं हटाई गईं, जो कालों को मत देने से रोकती थीं। 1966 में इस कानून को वैध बताते हुए सर्वोच्च अदालत ने कहा, "एक शताब्दी तक पंद्रहवें संशोधन के व्यवस्थित विरोध को झेलने के बाद कांग्रेस को समय का लाभ उठा इस बुराई के दोषियों के बदले उसके पीड़ितों पर ध्याान देना चाहिए।" तब कहीं जाकर उत्तर और दक्षिण के काले लोग बड़ी संख्या में मत देने लगे।

जैनिस, कैरिसन, जैरेट व जॉनथन एडमस को

- जी.बी.एल.

कीथ एन्थनी जोन्स, "मेरे भाई" को

- सी.बी.

ग्वैन्डोलिन बैटल-लेवर्ट इण्डियाना वैसले विश्वविद्यालय में शिक्षा की सहायक प्रोफेसर हैं। वे *म्युज़िक इन डैरिकस् हार्ट* की लेखिका हैं, जिसे 2000 में पेरेन्टस् चॉइस अनुशंसित पुस्तक चुना गया था। उसके चित्र भी कोलिन बूटमैन ने ही बनाए थे। वे इण्डियाना में रहती हैं।

कोलिन बूटमैनने किशोर पाठकों के लिए कई चित्र बनाएं हैं। जिनमें डेविड ए. एडलर की *अ पिक्चर बुक ऑफ हैरिएट बीचर स्टोव* तथा *डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर* शामिल हैं। वे न्यू यॉर्क शहर में रहते हैं।